प्रथम अध्याय

" विष्णु प्रभाकर के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय "

प्रथम अध्याय

" विष्णु प्रभाकर के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय "

प्रास्ताविक :-

आज हिन्दी साहित्य में विष्णु प्रभाकर का नाम विविध साहित्यिक विधाओं के क्षेत्र में अपनी रचनात्मक देन के लिए विशिष्टता। रखता है। बड़ी कुशलता से उन्होंने एक साथ नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र तथा बालसाहित्य का सृजन किया है।

हिन्दी साहित्यकारों में उनका अपना एक विशिष्ट स्थान है। वे प्रतिष्ठित कहानीकार, प्रख्यात नाटककार, उपन्यासकार, एकांकीकार हैं। बाल साहित्यकार के रूप में भी उन्होंने अनगिनत दिलचस्प कहानियाँ तथा एकांकियों को सफलता से लिखा है। ऐसा लगता है कि उनका साहित्य मानो उनकी जिन्दगी का प्रतिबिंब है। साहित्य में दिखायी देनेवाले विष्णु प्रभाकर जी अपनी असली जिन्दगी में हूबहू वैसे ही हैं। मानवता एवं संवेदनशीलता उनमें कूट - कूट कर भरी हुई है। वे जैसा कहते हैं वैसा यकीनन बर्ताव करते हैं। उनका व्यक्तित्व अनोखा है, पूरानी पीढी के लोग उन्हें नया समझते हैं, तो नयी पीढीवाले उन्हें पूराना मानते हैं। विष्णु जी सन १९३६ में साहित्यिक क्षेत्र में आए। उनके साहित्य तथा जीवन में भी नए और पुराने विचारों का सामंजस्य प्रस्थापित हुआ है। विष्णु प्रभाकर जी के बारे में डॉ. रघुवीर दयाल वार्ष्णेय कहते हैं -" एक साहित्यकार के रूप में भी अपना परिचय उन्होंने

साहित्य के विभिन्न अंगो का लेखन कर हिन्दी जगत को दिया है। द्वितीय महायुध्द, स्वतंत्रता प्राप्ति, बंगाल का अकाल आदि अनेक समसामायिक विषयों को लेकर उन्होंने अपने साहित्य का निर्माण किया। लेकिन द्वितीय विश्वयुध्द ने जिस अकाल, हिंसा, बिभत्सता और नाटकीयता को जन्म दिया था उसका चित्रण बिना किसी घृणात्मकता से विष्णु प्रभाकर जी ने सफलता से किया है।[१] विष्णु प्रभाकर जी के साथ डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना जी ने २४० घण्टे गुजारे थे। वे उन्हें 'आवारा मनुष्य' समझते हैं। उनके बारे में डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना लिखते हैं -- "मैंने प्रेमचंद जी को नहीं देखा, शरत्‌चंद्र को नहीं देखा, लेकिन उन दोनों के साहित्यिक उत्तराधिकारी विष्णु प्रभाकर को देख रहा हूं।"[२]

विष्णु प्रभाकर जी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न तथा श्रेष्ठ साहित्यकार हैं। हिन्दी नाटककारों में उनका विशिष्ट स्थान है। वे संवेदनशील मानवतावादी तथा सृजनशील साहित्यकार हैं।

१. १ जीवन परिचय --

१.१.१ जन्म तथा बचपन --

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म २१ जून, १९१२ को मीरापुर जिला मुजफ्फर नगर, उत्तरप्रदेश में हुआ। उनके पिताजी का नाम दुर्गाप्रसाद और माता का नाम महादेवी था। उनके बड़े भाई का नाम ब्रह्मानंद और छोटे भाई का नाम महेश है। मानो एक ही घर में ब्रह्मा, विष्णु, महेश अवतरित हुए हैं। उनका वंशवृक्ष आगे तालिका से दिखाया जाता है --

---

१ डॉ. रघुवीर दयाल वार्ष्णेय - हिन्दी कहानी - बदलते प्रतिमान - पृ.१०५।

२ डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना - आवारा मानुष - विष्णुप्रभाकर - पृ.१५।

विष्णु प्रभाकर की वंशावली

चिरंजीलाल

दुर्गाप्रसाद — द्वारका प्रसाद — विश्वंभर सहाय

दुर्गाप्रसादजी का विवाह महादेवी से हुआ

ब्रह्मानंद — विष्णुप्रभाकर — महेश गुप्ता

अनीता — अतुल — अमित — अर्चना

विष्णु प्रभाकर जी के पिताजी धार्मिक वृत्ति के थे उनकी माताजी जितनी सुन्दर थी उतनीही कर्मठ थी । वह उर्दू लिखना पढना जानती थी । माता-पिताजी ने अपने बच्चोंपर अच्छे संस्कार किए । विष्णु जी के निर्माण में मामा और माँ का योगदान है । उनकी माँ का अरमान था कि बेटा कुछ बने । इसलिए उनको अपने से दूर रखा गया । १२ वर्षतक की आयुतक उनका बचपन बडे लाड प्यार में बीता । विष्णु प्रभाकर जी लिखते हैं --" माँ कहा करती थी कि बचपन में मुझे पढने का बहुत चाव था । इस क्षेत्र में स्वयं वही मेरी आदि गुरु थी । वह अपने मायके से दहेज में पुस्तकों का बक्सा भी लाई थी । सोचा करता था कौन बनाता है इन्हें ? कैसे बनाता है ? "[१]

गाँव में शिक्षा का प्रबन्ध बहुत कम था माँ ने बडे अरमान से विष्णु जी को मामा के पास हिसार भेज दिया । वह किस्सा लिखते समय विष्णु जी कहते हैं --" मुझे आगे बढने के लिए गाँव छोडकर जाना पडा ।

---

१ सं.डॉ.महिप सिंह - विष्णु प्रभाकर - व्यक्ति और साहित्य - पृ.१८ ।

आँखों में आँसू भरकर मेरी माँ ने यह कहते हुए हम दोनों भाइयों को अपने से दूर किया था कि राम-लक्ष्मण को वनवास दे रही हूँ जिससे वे कुछ बन सके।" [१]

मामा क्लर्क थे। वे आर्यसमाज के कट्टर अनुयायी थे। मामा का घर किताबों का भण्डार था। उनका प्यासा मन इस ज्ञानसागर में डूब गया और यहींपर ही प्राचीन साहित्य (वेद, पुराण, कुराण) प्रेमचंद, प्रसाद, बंकीम, रवीन्द्र और शरत्चंद्र आदि महान साहित्यकारों से परिचय हुआ। पहले विष्णु जी अंधविश्वासी थे। लेकिन जिन्दगी में एक ऐसा मोड आया कि जिस कारण उनका मतपरिवर्तन हुआ और वे आर्यसमाजी बने। उन दिनों एक महत्व-पूर्ण घटना घटित हुई जिसने विष्णु जी का व्यक्तित्व बनाने में सहायता की। यह घटना है सन १९२० की। काँग्रेस की सभा में एक दिन एक मासूम बच्चे ने अपनी झटपट किन्तु प्यारी भाषा में कहा था -" मैं खद्दर पहनता हूँ, मेरी प्रार्थना है आप भी खद्दर पहने। हिन्दू - मुसलमान मिलकर लडे अंग्रेजों से। मेरे चाचा ने तब मुझ से कहा था, देख रे, एक वह लडका है और एक तू है। कैसा अच्छा बोले है।" [२]

इस घटना से उनकी जिन्दगी बदल गयी। उसी पल उन्होंने कसम खायी थी कि वे मरते दम तक खद्दर पहनेंगे। आज करीबन साठ साल हुए किन्तु खद्दर उनके जिस्म से अब भी चिपका है।

विष्णु जी के जीवन की और भी एक घटना इन्हीं चाचा से संबंधित है। ये चाचा विष्णु जी से बहुत प्यार करते थे। उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी। चाचाजी चाहते थे कि विष्णु जी उनके होकर रहे लेकिन अंत में ऐसा हुआ कि उस चाचाजी ने विष्णु जी के बदले उनके छोटे भाई को गोद में ले लिया। इस कारण चाचाजी का प्रेम उस भाई की ओर ज्यादह दिखाई देने लगा। इस

---

१ सं. डॉ. महिप सिंह - विष्णु प्रभाकर - व्यक्ति और साहित्य- पृ. २०-२१।

२ वही पृ. १९।

घटना से विष्णु जी के बाल मनपर चोट लगी और विष्णु जी अपने-आप को छोटा समझने लगे । वे लिखते हैं --" आज भी यह मनोविज्ञान मेरे अंतर्मन के किसी कोने में साँप की तरह कुण्डली मारकर बैठ गया है । मैं अंतर्मुख हो उठा । जैसे कछुआ अपने अंग समेटकर खोल में घुसा रहता है । वैसा ही कुछ मेरे साथ हुआ । यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि मुझे बनाने में इस घटना का बहुत बड़ा हाथ है ।" १

१.१.२ शिक्षा -

उनकी बचपन की शिक्षा मीरापुर में हुई लेकिन शिक्षा का उचित प्रबन्ध वहाँ नहीं था । इसी कारण उनके मामा वहाँ से उन्हें अपने गाँव हिसार ले आए । नियमित रूप से दसवीं (मैट्रिक) तक ही विष्णु जी शिक्षा प्राप्त कर सके । उसके बाद आर्थिक तथा पारिवारिक कारणों से कॉलेज जाना संभव न हो सका । सन १९२६ में ही वे पंजाब सरकार की फर्म पर नौकरी करने लगे । बाद में पंजाब विश्वविद्यालय की इंटर और बी.ए.परीक्षाएँ बाहर से (सन १९३३-३४) बैठकर पूर्ण की । उन्होंने हिन्दी में तथा संस्कृत में ' विशारद ' की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की ।

विष्णु जी के जीवन में माँ का अनन्य साधारण स्थान था । लेकिन दुर्भाग्य से माँ से ही दूर रहना पड़ा । तब उनपर जो बीती उसका वर्णन करते हुए वे कहते हैं -" जब किशोरावस्था में माँ से अलग रहने को विवश हुआ तो मेरा दुर्बल मन स्नेह के अभाव में तीव्र हीन भावना का शिकार हो गया । पारिवारिक स्थितियों के कारण हीन भावना उससे पहले ही मुझ में आकंठ भर गयी थी जब माँ के प्यार की छाया दूर हो गयी तो आंतरिक दुर्बलता ने मुझे

---

१ कमलेश्वर - मैं इनसे मिला - (विष्णु प्रभाकर)

ग्रास लिया । यदि शीघ्र ही मुझे अभिव्यक्ति के साधन न मिल गए होते तो मैं आत्महत्या करके कभी का ' राही मुल्के अदम ' हुआ होता ।' [१]

१.१.३ विवाह तथा परिवार --

विष्णु जी का विवाह २६ वर्ष की आयु (सन १९३८) में हरिद्वार की सुश्री सुशीला से हुआ । उस काल की सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टिकोन से उनका विवाह बहुत बाद में हुआ । वास्तव में विष्णु जी अंतरजातीय विवाह करना चाहते थे । एक पंजाबी युवती के साथ उनका स्नेह भी था । लेकिन माँ की कर्मठता के कारण वे अपनी मर्जी के अनुसार विवाह नहीं कर सके ।

विष्णु जी के दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं । उनकी बड़ी लड़की अनीता विवाहित है और हिन्दी की अध्यापिका भी है । छोटा पुत्र अतुलकुमार एम.एस.-सी. है और लघु उद्योग के क्षेत्र में काम कर रहा है । उससे छोटा अमितकुमार इलेट्रिकल ईंजिनियर है और कानपुर में स्वदेशी कॉटन मिल में काम करता है । सबसे छोटी लड़की अर्चनारानी एम.ए. हो चुकी है ।

सन १९४४ से विष्णु जी दिल्ली में किराए के मकान में आज तक रहते आये है । उन दिनों में भी उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । दिल्ली में उन्होंने दो नौकरियाँ छोडी परिणामत: साहित्य लेखन और खासकर रेडियो तथा आजकल दूरदर्शन उनकी उपजीविका का प्रमुख साधन बन गया है । वे जिस स्थिति में रहे, खुशी और आनंद के साथ रहे । अपनी आर्थिक परिस्थिती कभी भी, कहीं भी उन्होंने जाहिर होने नहीं दी । उनकी इस साहित्य यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण स्थान उनकी गृहलक्ष्मी का है । उदयशंकर भट्ट के शब्दों में --

---

१ विष्णु प्रभाकर - अपनी नजर में (१ जनवरी १९७८)

"विष्णु प्रभाकर उन लेखकों में है जो लेखन व्यवसाय का आश्रय लेकर आर्थिक संकटों का सहर्ष आवाहन करते हैं तथा निरंतर अभाव में पिसते रहकर अपने ध्येय के प्रति सच्चे रहते हैं। इस दृष्टि से मैं श्री विष्णु प्रभाकर को अन्यतम हिन्दी सैनिक मानता हूं।"[१] अगर विष्णु जी हिन्दी के अन्यतम सैनिक हैं तो उस सैनिक को प्रेरणा देनेवाली देवी है उनकी धर्मपत्नी सुश्री सुशीला जी।

१.१.४ <u>प्रभाकर नाम का इतिहास</u> --

विष्णु प्रभाकर का 'प्रभाकर' यह नाम सचमुच उनका उपनाम नहीं है, तो इस नाम के पीछे इतिहास है।

माता-पिता ने उनका नाम विष्णु रखा था। प्यार से घर के लोग उन्हें विष्णुदयाल या विष्णुसिंह कहकर पुकारते थे। जब विष्णु जी हिसार में शिक्षा पाने के लिए आ गए तो अध्यापक ने विष्णु जी से पूछा 'तुम्हारा वर्ण कौनसा है? विष्णु जी ने उत्तर दिया -'वैश्य' तब प्रति उत्तर में अध्यापक ने कहा तुम्हारा नाम विष्णु गुप्त होना चाहिए। इस प्रकार वे गुप्त हो गए। एक कार्यालय में नौकरी मिल गई। सर्विस बुक तैयार हो गया तो विष्णु जी चौंक पड़े।' विष्णु गुप्त' के बदले 'विष्णु दत्त' लिखा था। उन्होंने नाम बदल देने का कारण पूछा तो क्लर्क कहा गुप्ता ज्यादह होने के कारण 'विष्णु दत्त' लिख दिया। यह नाम विष्णु जी को पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने पहले सिर्फ विष्णु नामसेही लिखना शुरु किया। एक संपादक बोले कि 'विष्णु' यह नाम बहुत छोटा है उसीने पूछा कि आपने कोई परीक्षा

---

१ डॉ.वीरेन्द्र सक्सेना - आवारा मनुष्य (विष्णु प्रभाकर)-पृ.३२।

पास की है। तब विष्णु जी बोले ' हाँ हिन्दी की ' प्रभाकर ' परीक्षा पास की है।' तो संपादक बोले ' मैं ही तुम्हारा नाम प्रभाकर रखूँगा।' तभी से उनका नाम विष्णु प्रभाकर हो गया।

१.१.५ साहित्यिक प्रेरणा - प्रभाव —

मानवतावादी सृजनशील साहित्यकार विष्णु प्रभाकर सबसे निराले हैं। स्वभाव से अबोल तथा एकांत साधन होने की वजह से हमेशा वे अपने में खोये - खोये से रहते हैं। बचपन में उन्हें पढने का शौक था। पिताजी की तमाखू की दूकान में एक टोकरा हमेशा किताबों से भरा रहता। जो जी चाहे उसे विष्णु जी दिलोजान से पढते। मामा के यहाँ तो आर्यसमाज का ग्रंथालय था। अपनी हालात की वजह से कॉलेज जाने का सपना, सपना ही रह गया। डॉ.वीरेन्द्र सक्सेना और विष्णु प्रभाकर एक साथ सफर कर रहे थे। बातचीत के दौर में सक्सेना जी ने उनसे सवाल किया —' आपने पूर्ववर्ती साहित्यकारों में आप किनसे सबसे अधिक प्रभावित हुए ? विष्णु जी बोले साहित्यकार, जिनसे मैं प्रभावित हुआ वे हैं -- शरत्चंद्र ,प्रेमचंद और प्रसाद, फिर मैं जैनेन्द्र से प्रभावित हुआ। यहाँ तक कि वात्सायन ने एक चिठ्ठी लिखी, जिसमें मुझे जैनेन्द्र की शैली का आदमी कहा गया और मुझे इससे मुक्त होने की राय दी। विदेशी साहित्यकारों में मुझे हार्डी, टालस्टाय,चेखव अच्छे लगे। मेरा प्रारंभिक जीवन काफी त्रासद रहा है। इसलिए मेरे साहित्य में भी करुणा पैदा हुई। और मैं मानता हूँ कि भावुकता के बिना साहित्य नहीं पैदा होता।'[१]

गांधीजी से भी उन्होंने प्रेरणा ली साहित्य में उनको गांधीवाद का प्रवक्ता कहा जाता है। गांधीजी ने दूसरों के लिए जीवन जीने की सीख दी।

---

१ डॉ.वीरेन्द्र सक्सेना - आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर)-पृ.३२।

विष्णुजी का विश्वास है यदि लोग सच्चाई के रास्तों पर चल सके तो बहुत-सी समस्याएँ अपने आप सुलझ जाएँगी ।

इसी प्रेरणा के बलपर वे जिन्दगी के रास्ते पर नयी उमंग से आगे बढ रहे है । वे जीवन के दर्शक हैं जीवन के आलोचक नहीं ,सौम्य साहित्य - साधक हैं । वे मानवता की तलाश में व्यग्र रहते हैं । वे हमेशा अपने में डूबकर लिखते हैं ,मानव ही उनका लक्ष्य है । इस लक्ष्य की वजह से ही विष्णु जी का पूरा साहित्य मानवता एवं इन्सानियत से आलोकित है । रेडियो भी उनका प्रेरणा का स्त्रोत रहा है । रेडियों से प्रेरणा लेकर ही उन्होंने अधिकांश एकांकी लिखे हैं ।

विजयेन्द्र स्नातक विष्णु प्रभाकर जी को सौम्य- साहित्य साधक मानते हैं । वे प्रभावित होकर विष्णु जी के बारे में कहते हैं --" कलम स्वालंबन का मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों में प्रतिनिधित्व करती है, कलम पुरुषार्थ का भी प्रतीक है और स्वालंबन का बिंब भी । विष्णु जी पुरुषार्थ और स्वावलंबन के साक्षात मूर्तरूप हैं । विष्णु जी ने जब कलम पकडी थी तब प्रेमचंद और शरदचंद्र जैसे कथाशिल्पी ही उनके पथ-प्रदर्शक थे । ज्यो-ज्यों पथ प्रशस्त होता गया साहित्य की अन्य विधाएँ भी उनके रचना संसार में समाविष्ट होती गई और आज कहानी,उपन्यास, नाटक, एकाकी,रेखाचित्र,संस्मरण,निबंध,यात्रा - वृत्त, बाल-साहित्य आदि विधाओं में उनकी साहित्य निर्मिति रही है ।"[१]

राजनीति में जाने का उनका बडा आस्मान था । उन्हें ऐसा लगता था कि वे स्वयं स्वातंत्र्य आंदोलन में भाग ले लेकिन परिवार की ऐसी हालत थी कि उन्हें मजबूरी से अंग्रेज सरकार की नौकरी करनी पडी । इस बात पर

---

१ विजयेन्द्र स्नातक का लेख - सौम्य साहित्य साधक - पृ.११ ।

डॉ.के.पी.शहा अपने प्रबन्ध में लिखते हैं --" जिस अंग्रेज सरकार के विरुध्द वे अपनी आवाज और आत्मा की वाणी को खुले आम बुलंद करना चाहते थे, इसी शासन के अधीन उन्हें मजबूरन नौकरी करनी पडी। इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप अंतर्द्वन्द्व का जन्म हुआ अपनी इस व्यथा को प्रकट करने के लिए विष्णु जी को अपनी लेखनी का सहारा लेना पडा।" [१]

१.२ कृतित्व --

पढाई के कारण वे अपने मामा के गाँव गए थे। मामा आर्यसमाजी होने के कारण उनका घर किताबों से भरा था। आधुनिक साहित्य में खासकर प्रेमचंद, प्रसाद, बंकीम, रवीन्द्र, शरत्, टॉलस्टाय, चेखव, थॉमस, हार्डी आदि का साहित्य उन्होंने दिलचस्पी से पढ लिया। लेखक बनने की अभिलाषा दिल में पैदा हो गयी। सन १९२६ में जब वे आठवीं कक्षा में थे तो उनका एक पत्र 'बाल सखा' में छप गया। आगे चलकर आर्यसमाज में भाषण देने के अवसर आए वे अपने लिखित भाषण छपने के लिए भेजते। उनकी भाषा उस वक्त भी सुन्दर तथा सरल थी।

मन की टीस एवं व्यथा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्हें साहित्य रूपी एक साधन मिल गया। शुरु-शुरु में कुछ गद्यगीत लिखे उनमें से कुछ हंस, सुधा आदि में सन १९३०-३६ तक के अंको में प्रकाशित हो चुके। कुछ कविताएँ भी लिखी लेकिन उनका विषय आर्यसमाज तक ही सीमित रहा। उन दिनों 'मिलाप' नया निकल रहा था। उनका 'प्रेमबंधु' नाम से स्वामी दयानंद की जीवनीपर लिखा हुआ भाषण छप गया। वे 'प्रेमबंधु', नाम से ही कहे सालो -

---

१ डॉ. के.पी.शहा - विष्णु प्रभाकर के साहित्य का अनुशीलन, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की पीएच.डी.उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध - पृ.२६।

तक लिखते रहे । नवंबर १९२१ में उनकी 'दिवाली के दिन' लिखी गयी कहानी संयोग से 'हिन्दी मिलाप' में छप गयी । विष्णु जी की इतनी सुन्दर भाषा देखकर उनके बड़े भाई ब्रजदत्त निहाल हुए । इसी कारण विष्णु प्रभाकर जी का लिखने का हौसला बढ़ गया । मामा और बड़े भाई ने इन्हें निरंतर प्रेरणा दी । यदा-कदा कुछ लिखते तो वे 'हिन्दी मिलाप' एवं युगांतर' को भेज देते । संपादकों में आर्यमित्र' आगरा के संपादक पं.संतराम उनके प्रेरणास्त्रोत रहें । सन १९३० में लाहौर से अलंकार' मासिक का प्रकाशन शुरू हुआ था । इसके संपादक चंद्रगुप्त विद्यालंकारजी थे । विष्णुजी की दो कहानियाँ अलंकार में छपी थी । विद्यालंकारजी ने विष्णु जी को मनोविज्ञान की ओर ध्यान देने के लिए कहा ।' आर्यमित्र' में विष्णु जी के कुछ लेख प्रकाशित हुए । मुन्शी प्रेमचंद जी की' जागरण' नामक पत्रिका में होली' विषय पर विष्णु जी का लेख प्रकाशित हुआ । ' संघर्ष के बाद' यह कहानी हँस में छप गयी । तब से उनके संबंध जैनेन्द्र के साथ घनिष्ट हुए ।

जैनेन्द्र ने लिखा है " विष्णु जी की रचनाएँ जब भी मैंने पढ़ी सदा भीतर भावोत्कर्ष अनुभव किया है । वे हृदय को छुती हैं कारण उनके लिखने में हृदय का रोग है,आदर्श के प्रति लगन है और यह तत्व हिन्दी में विशेष मिलता है ।" [१]

डॉ.के.पी.शहा का कहना है --" खुली आँखों से वे दुनिया को देखते थे । सूक्ष्म तथा संवेदनशील निरीक्षण शक्ति के द्वारा वे मनुष्य के अंतरंग में पहुँचने की कोशिश करते हैं ।" [२]

---

१ डॉ.रामचरण महेन्द्र - प्रतिनिधि एकांकी - पृ.७४ ।

२ डॉ.के.पी.शहा - विष्णु प्रभाकर के साहित्य का अनुशीलन शिवाजी विश्वविद्यालय ,कोल्हापुर की पीएच.डी.उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध - पृ.३० ।

उनके जीवन-परिचय को देखने के उपरांत मेरा यह निष्कर्ष है कि विष्णु जी जिस परिस्थिति में और जिस ढंग से जीए हैं उसी का दर्शन उनके साहित्य में प्रकट होता है।

साहित्य --

१.२.१ जीवनी साहित्य --

' आवारा मसीहा '

हिन्दी में आवारा मसीहा रचना जीवनी के रूप में प्रख्यात हो गई है। इसकी ख्याति का प्रधान कारण एक ओर जहाँ स्वयं शरत् को है, जिसकी जीवनी लिखी गई है, वहाँ दूसरी ओर इस जीवनी के लेखक विष्णु प्रभाकर भी हैं।

चौदह वर्ष लम्बी कालावधी के बाद वह जीवनी पूर्ण हुई है। इस जीवनी को पूर्ण करते समय लेखक को बहुत कष्ट उठाने पड़े। वे जीवनी साहित्य की सामग्री की तलाश में अधिक से अधिक उन लोगों से मिला, जिनका किसी-न-किसी रूप में शरत से प्रत्यक्ष संबंध रहा था।

उन्होंने जीवनी को तीन पर्वों में विभाजित किया है --

(१) दिशाहारा
(२) दिशा की खोज और
(३) दिशांत।

विष्णु जी ने ' आवारा - मसीहा ' में शरतजी का जो चित्र उभारा है, वह भरा-पूरा चित्र है और अत्यंत आकर्षक भी। इसमें व्यक्ति शरत जी की भी तस्वीर उभरी है और साहित्यकार शरत् की भी।

१.२.२. <u>कहानी-संग्रह</u> --

सन १९४५ से लेकर अब तक विष्णु जी के बारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

१) आदि और अंत	- सन १९४५
२) रहमान का बेटा	- सन १९४७
३) जिंदगी के थपेड़े	- सन १९५२
४) संघर्ष के बाद	- सन १९५३
५) धरती अब भी घूम रही है	- सन १९५९
६) सफर के साथी	- सन १९६०
७) खण्डित पूजा	- सन १९६२
८) साँचे और कला	- सन १९६२
९) मेरी उँतीस कहानियाँ	- सन १९६७
१०) मेरी प्रिय कहानियाँ	- सन १९७०
११) पुल टूटने से पहले	- सन १९७०
१२) जीवन पराग (मार्मिक घटनाएँ)।	

प्रत्येक कहानी-संग्रह के अंतर्गत बीस। पच्चीस। तीस। तैंतीस के लगभग कहानियाँ हैं। कुल मिलाकर दो सौ पचास से ज्यादा कहानियाँ इन्होंने लिखी हैं।

१.२.३ <u>उपन्यास - साहित्य</u> --

प्रभाकर जी के मतानुसार यथार्थ को प्रकट करने का उपन्यास सबसे बड़ा और सशक्त माध्यम है।

निशिकांत --

पूराना नाम - ढलती रात इस उपन्यास में उन्होंने निम्न-मध्य वर्ग के जीवन-संघर्ष के साथ प्रेम का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है ।

तट के बंधन --

वस्तुत: ` तट के बंधन ` उपन्यास में उन्होंने नारी जीवन के त्रासदी को बताने की कोशिश की है । प्रमुखत: नारी की विविध समस्याओं का चित्रण करते हुए उन्होंने नारी को स्वयं अपने पथ का निर्माण करने की प्रेरणा दी है ।

स्वप्नमयी --

यह विष्णु जी का तीसरा उपन्यास है । इस उपन्यास में भी नारी समस्याओं को ही उजागर करने का प्रयत्न किया गया है ।

दर्पण का व्यक्ति --

यह उपन्यास विष्णु जी के अन्य उपन्यासों से सर्वथा अलग है । इस उपन्यास में पूरी कहानी केवल एक पत्र में समेट दी है ।

` दर्पण का व्यक्ति ` में पुरूष प्रधान समाज में नारी की निम्नतर स्थिति, विधवा, विवाह, सुहाग की विडंबना, विवाह विच्छेद आदि कई वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर विचार किया गया है । और विरोधाभासों को स्पष्ट किया गया है ।

कोई तो --

इस उपन्यास में मध्यवर्गीय नैतिकता का पर्दाफाश किया है । सड़े-गले नैतिक मूल्यों, परंपरागत संस्कारों और जड मान्यताओं के फंजे से जकड़े रहनेवाले मध्यवर्गीय व्यक्ति की अभिशप्त नियति, संपूर्ण उपन्यास में इसी विषय को लेकर विवेचन किया है ।

१.२.४ नाटक-साहित्य --

विष्णु प्रभाकर जी ने हिन्दी साहित्य के विविध विधाओं पर लेखन किया है किन्तु हिन्दी साहित्य में उनका विशेष स्थान नाटककार के रूप में ही है । सन १९५७ से लेकर अब-तक उन्होंने कुल तेरह नाटकों की रचना की है । इन सभी नाटकों में विष्णु जी ने जीवन के विविध पक्षों का विविध समस्याओं का चित्रण किया है । विष्णु जी के नाटक मनोवैज्ञानिक,ऐतिहासिक ,रूपांतरित, राजनैतिक एवं सामाजिक हैं । उनके नाटकों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है ---

मनोवैज्ञानिक नाटक --

(१) डॉक्टर, (२) टगर,(३) बंदिनी ।

ऐतिहासिक नाटक --

(१) समाधि, (२) नवप्रभात ।

रूपांतरित नाटक --

(१) होरी, (२) चंद्रहार ।

राजनैतिक नाटक --

(१) कुहासा और किरण , (२) सत्ता के आर-पार ।

सामाजिक नाटक --

(१) युगे-युगे क्रांति ,(२) टूटते परिवेश, (३) अब और नहीं ।

विष्णु जी ने अपने सभी नाटकों में मनुष्य के व्यक्तिगत और समाजगत वैषम्यों और विविध जटिल समस्याओं से संघर्ष का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया है । इन्होंने अपने नाटकों में समस्या से जूझते मानव,सामंती और पूँजीवादी जीवन की जर्जरता ,समाज की पुरानी मान्यताओं और मर्यादाओं के खोखलेपन,मनुष्य की दुर्बलताएँ और उसकी समस्याएँ,मनुष्य की आशा-निराशा और अवसादपूर्ण

जीवन का ऐसा चित्रण किया है कि हमें इन सारे दृश्यों को देखकर जीवन से जूझते हुए आगे बढने का बल मिलता है ।

मनोवैज्ञानिक नाटक --

(१) डॉक्टर --

विष्णु जी द्वारा रचित यह नाटक सन १९५८ में प्रकाशित हुआ । यह नाटक एक पतिद्वारा परित्यक्ता पत्नी की क्रिया-प्रतिक्रियाओं का मनो - वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है । इस नाटक में अशिक्षित किन्तु सुसंस्कृत पत्नी को पति ने जब छोड दिया तब उस अशिक्षित नारी का स्वाभिमान जाग उठा और वह डॉक्टर बन गयी । इस बात को विष्णु जी ने इस तरह से व्यक्त किया है कि किसी भी स्वाभिमानी नारी का स्वाभिमान नाटक पढकर जाग उठे ।

(२) टगर --

टगर नाटक की कथावस्तु भी ' डॉक्टर ' नाटक के समान मनोवैज्ञानिक धरातल पर ही आधारित है । ' टगर ' यह एक ऐसी स्त्री की कथा है जो अपने पतिद्वारा उपेक्षित होने के बाद वह इस निर्णय पर पहुँचती है कि अपने पहले प्रेमी और पति की बेवफाई का बदला वह दुनिया की समस्त पुरुष जाति से लेना चाहती है ।

नाटककार विष्णु प्रभाकर ने यहाँपर टगर को अतिआधुनिक बनाने की कोशिश की है और उसके मूल में छिपी हुई संघर्ष भावना को दिखाया है ।

(३) बंदिनी --

नाटककार ने बडी सजगता के साथ बंदिनी नाटक की कथावस्तु का निर्वाह किया है । उन्होंने इस नाटक के जरिए यह बताने की कोशिश की है

कि आधुनिक युग में भी मनुष्य किस प्रकार अंध:विश्वासों के पीछे घूमता-फिरता रहता है। लगता है विष्णु जी ने पूरी ईमानदारी के साथ हमारे संस्मुख मनुष्य के इस दोष को रखा है। इसमें वे सफल भी हुए हैं।

ऐतिहासिक नाटक —

(१) नवप्रभात --

विष्णु प्रभाकर ने पौराणिक तथा ऐतिहासिक आधार लेकर नव - प्रभात नाटक की निर्मिति की है। पुरानी परंपराओं में सम्राट अशोक की प्रख्यात कथावस्तु को आधार बनाकर युध्द की भयानकता उसमें रौंदी हुई मानवता का चित्रण प्रस्तुत नाटक में किया है।

इस ऐतिहासिक कथावस्तु द्वारा विश्वबंधुत्व तथा शांति की अभिव्यक्ति विष्णु जी ने की है।

(२) समाधि --

यह भी एक ऐतिहासिक नाटक है याने इसकी कथावस्तु का आधार इतिहास है। इस नाटक में नाटककार ने जनजागृति के लिए संघर्ष की भावना को आत्मसात करके तत्कालीन परिस्थितियों से जूझाना चाहिए यह स्पष्ट किया है। नाटककारने साहित्य और कला प्रेम का संतुलीत उपयोग ग्राह्य माना है। यहाँ पर गुप्ता के पतन का एक कारण उनका असंतुलित कला-प्रेम भी माना जाता है। समाधि नाटक का कवि बार-बार सांस्कृतिक दिग्विजय का दावा पेश करके भी विलासिता का विरोध करता है। वह जितनी कुशलतासे कविता कर सकता है उतनी ही खूबी से तलवार भी चला देता है। यह समन्वय इस नाटक की रीढ है।

रूपांतरित नाटक —

(१) होरी —

होरी प्रेमचंद जी के प्रसिध्द उपन्यास ` गोदान ` का नाटय रूपांतर है ।

जिस तरह प्रेमचंद जी ने जिन अमर पात्रों की सृष्टि की है, उनमें ` होरी ` का स्थान बहुत ऊँचा है । इस नाटयरूपांतर में वह अपनी पूरी ऊँचाई के साथ आ गया है ।

(२) चंद्रहार —

प्रभाकर जी ने सन १९५२ में प्रेमचंद के ` गबन ` उपन्यास का नाटय-रूपांतर ` चंद्रहार ` के नाम से किया । नाटककार ने नाटय निर्मिति में सिर्फ नाटकोंपयोगी सामग्री को ग्रहण किया है ।

राजनैतिक नाटक —

(१) कुहासा और किरण —

प्रस्तुत नाटक का कथानक समस्यामूलक है,जो स्वाधिन भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन से संबंधित है ।

नाटक में स्वातंत्र्योत्तर,सामाजिक भ्रष्टाचार की अभिव्यक्ति हुई है । इस नाटक से नाटककार यह साबित करना चाहता है कि आधुनिक भारत को सामाजिक और राजनीतिक समस्या को राष्ट्रीय परिवेश में एक महत्वपूर्ण तथ्य के आधारपर स्पष्ट आंचला और मुखौटाधारियोंपर सीधा आघात किया है ।

(२) सत्ता के आर-पार —

भरत और बाहुबली, इन दो भाईयों के युध्द का आधार लेकर यह नाटक लिखा गया है । राजनीति में भाई,भाई को नहीं पहचानता इसी का यह सुन्दर उदाहरण है । इस नाटक में अध्यात्मिकता भी दिखायी देती है । इसमें अहंकार छोडे बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती यह भी स्पष्ट किया है ।

सामाजिक नाटक --

(१) युगे - युगे क्रांति -

' युगे - युगे क्रांति ' में नाटककार विष्णु जी ने विवाह के क्षेत्र में चिरकाल चली आ रही क्रांति का निरूपण किया है। हर युग में प्रस्थापित मान्यता को तोडकर नई मान्यता को प्रस्थापित करने का क्रम बराबर चलता रहता है।

नाटक में जो सूत्रधार है उसी के ही शब्दों में --

" यह चक्र कभी नहीं रुकता। जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं कल वे ही प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। इतिहास बार-बार अपने को दोहराता है। वे समझते हैं उन्होंने समय को पकड लिया है। लेकिन जादूगर काल उन्हें फाँकी देकर न जाने कब आगे बढ जाता है और उसके मंचपर आ जाती है नई पीढी उसके लिए अजनबी होती है।"[१] ' युगे - युगे क्रांति ' नाटक पर हम आगे विस्तार से विवेचन कर रहे हैं।

(२) टूटते परिवेश --

इस नाटक का मूलाधार हमारा आज का जीवन है। जिसकी ओर हम स्वतंत्रता के बाद वर्षों से अग्रसर हो रहे हैं।

' टूटते-परिवेश यह एक ऐसा नाटक है जिसमें मध्यम वित्त परिवार की कहानी है जिसमें नया पुराना, दोनों सह-अस्तित्व की विवशता झेलते दिखाई देते हैं जैसे कि प्राय: होता है और आज तो यह सामान्य हो गया है। परिवार में पुरानी और नई दो पीढियों को एकही छत के नीचे जीवन-यापन करने की

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३४-३५।

विवशता दोनों के बीच संघर्ष की स्थिति को पैदा करती है।

(३) अब और नहीं --

इस नाटक में नारी-शोषण का लंबा इतिहास है। इस नाटक में विश्व की सभी नारियों को उनके अपने स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान करा दी है। प्रस्तुत नाटक में प्रभाकर जी ने आधुनिक परंपराओंपर प्रहार किया है।

१.२.५ एकांकी - संग्रह -

विष्णु जी के कुल एकांकी-संग्रह चौदह हैं --

१) इन्सान और अन्य एकांकी	- सन १९४७
२) क्या वह दोषी था ?	- सन १९५१
३) अशोक	- सन १९५६
४) बारह एकांकी	- सन १९५८
५) दस बजे रात	- सन १९५९
६) ये रेखाएँ ये दायरे	- सन १९६३
७) ऊँचा पर्वत गहरा सागर	- सन १९६६
८) मेरे प्रिय एकांकी	- सन १९७०
९) मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी	- सन १९७१
१०) तीसरा आदमी	सन १९७४
११) मेरे नए एकांकी	- सन १९७६
१२) डरे हुए लोग	- सन १९७८
१३) मेरे श्रेष्ठ परछाई	- सन १९८०
१४) प्रकाश और परछाई	-

एकांकी के क्षेत्र में भी विष्णु जी का कार्य विशेष सराहनीय है।

१.२.६ बाल साहित्य एवं अन्य स्फुट रचनाएँ --

कहानी

१) सरल पंचतंत्र (दो भाग)

२) जब दीदी भूत बनी

३) तपोवन की कहानी

४) स्वराज्य की कहानी

५) घमंड का फल

६) मोतियों की खेती

७) हीरे की पहचान

८) पाप का घड़ा

९) गुड़िया खो गई ।

नाटक एकांकी --

१) अभिनव बाल एकांकी

२) अभिनव अभिनय एकांकी

३) हड़ताल

४) जादू की गाय

५) नूतन बाल एकांकी

६) कुंती के बेटे

७) स्वाधीनता संग्राम

८) बच्चों के प्रिय नाटककार ।

जीवनी

१) शरतचंद्र चटोपाध्याय

२) बंकीमचंद्र

३) सरदार वल्लभभाई पटेल ।

अन्य रचनाएँ --

१) यात्रा-विवरण

२) विविध - पहला सुख निरोगी काया

३) एक देश एक हृदय

४) समाज विकास माला

५) कुछ शब्द,कुछ रेखाएँ - (संस्मरण) ।

निष्कर्ष --

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि जीवन का कठिन सफर पार करके विष्णु प्रभाकर अपने साहित्य क्षेत्र में सफल हुए दिखाई देते हैं । उनका व्यक्तित्व उन्मुक्त साहित्यकार का है । उनका जीवन सहज और सुन्दर होने के कारण उनका साहित्य भी सहज सुन्दर हो गया है । बड़ी कुशलतासे उन्होंने एक साथ नाटक,एकांकी,उपन्यास,कहानी,संस्मरण,जीवनी,रेखाचित्र तथा बाल साहित्य का सृजन किया है । विष्णु जी एक आधुनिक लेखक हैं । उनका व्यक्तित्व एक आत्मसम्मानी,ईमानदार लेखक का व्यक्तित्व है,जिसने लेखन को सदैव एक साधना के रूप में ग्रहण किया ।

बचपन से पढ़ने का शौक,नेकी से रहना आदि आदतों के कारण उनका मन देश-प्रेम से भरा था । भले-बुरे अनुभवों को झेलते हुए वे आजतक खड़े हैं । साहित्य क्षेत्र में उनके आने का कारण है उनका परिवेश । अपने आंतरिक द्वन्द्व को प्रकट करने के लिए उन्होंने लेखन का सहारा लिया । अत: विष्णु प्रभाकर के साहित्य में सामाजिक जीवन के पारिवारिक पक्ष का चित्रण पूर्ण रूप से हुआ है ।